इकाई 14 व्यंग्य निबंध : वैष्णव की फिसलन (हरिशंकर परसाई)

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 निबंध का वाचन

14.3 निबंध का सार

14.4 संदर्भ सहित व्याख्या

14.5 निबंध का कथ्य या उसकी अंतर्वस्तु

14.6 चरित्र-विधान

14.7 लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति

14.8 संरचना शिल्प

14.8.1 शैली

14.82 भाषा

14.9 निबंध का शीर्षक

14.10 प्रतिपाद्य

14.11 सारांश

14.12 उपयोगी पुस्तकें

14.13 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस खंड की पिछली इकाई 13 में आपने प्रेमचंद की 'पूस' की रात 'कहानी का अध्ययन किया है। इस इकाई में आप हरिशंकर परसाई के व्यंग्य निबंध 'वैष्णव की फिसलन' का अध्ययन करने जा रहे हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- परसाई के जीवन और व्यंग्यकार के रूप में उनके महत्व के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- निबंध के सार को लिख और उसके महत्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे;
- निबंध का कथ्य या उसकी अंतर्वस्तु की पूरी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- निबंध में चरित्र-विधा की बारीकियों को समझ सकेंगे;
- निबंध में लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति से परिचित हो सकेंगे;
- व्यंग्यात्मक निबंध के संरचना-शिल्प की बारीकियों का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- निबंध के शीर्षक और प्रतिपाद्य की पूरी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

यहाँ आप हरिशंकर परसाई जैसे हिंदी के जाने-माने एक प्रखर व्यंग्यकार की रचना का

कर लेना आपके लिए उपयोगी होगा। स्वर्गीय परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1924 ई0 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जनपद के जमानी नामक गाँव में एक अत्यंत साधारण परिवार में हुआ था। मैट्रिक परीक्षा से पूर्व ही माँ का असमय निधन और लकड़ी के कोयले के ठेकेदार पिता की असाध्य बीमारी के कारण उन्हें गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। पारिवारिक जिम्मेवारियों को निभाते हुए भी परसाई जी ने नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी एम.ए. और शिक्षण में डिप्लोमा किया। जंगल विभाग में नौकरी से लेकर उन्होंने विभिन्न विद्यालयों में अध्यापन करते - इस्तीफा देते हुए 1957 से हमेशा के लिए नौकरी से संबंध तोड़ लिया। परिवार बहन, भानजे और भांजी तक ही सीमित रहा। अभावग्रस्तता के कारण वे जीवनभर अविवाहित रहे। 10 अगस्त, 1995 में 71 वर्ष की आयु में लम्बी बीमारी के कारण उनकी मृत्यु हो गयी।

1957 से जीवन पर्यन्त परसाई जी स्वतंत्र लेखन के भरोसे ही रहे। अपने अभावग्रस्त जीवन के कटु-तिक्त अनुभवों और वामपंथी रुझान के कारण भारतीय सामाजिक विषमता की उनकी समझ अत्यंत गहरी रही है। भारतीय समाज के उज्ज्वल भविष्य की कामना से प्रेरित होकर उन्होंने अपने साहित्य में समूची भ्रष्ट भारतीय व्यवस्था पर तीखा प्रहार किया है। अपने जीवनादर्शों के मूल्य पर उन्होंने कहीं भी किसी भी, तरह का समझौता नहीं किया।

यहाँ इस बात का ध्यान रखना आपके लिए जरूरी है कि हरिशंकर परसाई बहुत कुछ लिखने के बावजूद निबंधकार, कथा-कहानीकार और आलोचक के रूप में अधिक प्रसिद्ध नहीं हैं। वे एक व्यंग्यकार के रूप में ही जाने जाते हैं। कहानी, निबंध, आलोचना आदि में उनका व्यंग्यकार रूप ही अधिक हावी रहता है। वैसे व्यंग्य को साहित्य की एक स्वंतत्र **विधा** के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता। कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास आदि विधाओं में **इसे** शिल्पगत एक माध्यम के रूप में ही स्वीकृति मिली है।

कबीर, भारतेंदु, निराला और नागार्जुन की व्यंग्य-परंपरा को हरिशंकर परसाई ने सम्पूर्ण विस्तार के साथ नयी ऊंचाइयाँ प्रदान की है। आस-पास के दूषित और विषमताग्रस्त भ्रष्ट सामाजिक वातावरण से खिन्न और असंतुष्ट साहित्यकार व्यंग्य के प्रयोग के लिए विवश हो जाता है। कबीर से लेकर परसाई तक के व्यंग्य में इस विवशता को समान रूप से देखा जा सकता है। इन सभी व्यंग्यकारों का उद्देश्य समाज के विभिन्न क्षेत्रों की विकृतियों का पर्दाफाश मात्र न होकर पाठक की परिवर्तन कामी चेतना को जागृत कर, उसे सामाजिक परिवर्तन के लिए कटिबद्ध करना भी रहा है।

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। वर्तमान राजनीति, समाजनीति, अर्थनीति, धर्म और उसके ढोंग भरे कर्मकांड, प्रशासनिक भ्रष्टाचार आदि सभी क्षेत्रों को उन्होंने अपने व्यंग्य बाणों की जद (सीमा) में रखा है। 'हँसते हैं, रोते हैं', 'तब की बात **और** थी', 'शिकायत मुझे भी है', 'सदाचार का ताबीज', 'अपनी-अपनी बीमारा', 'पगडंडियों का जमाना', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'निठल्ले की डायरी', 'तिरछी रेखाएँ', 'पाखंड का अध्यात्म', 'सुनो भाई साधो', आदि उनकी सभी रचनाएँ 'परसाई रचनावली' के छह खंडों में प्रकाशित है। ये सभी व्यंग्य बहुल रचनाएँ हैं।

हिंदी ही नहीं, भारत की बहुत सारी भाषाओं में व्यंग्यकार हुए हैं, लेकिन व्यंग्य को जिस गहरी मानवीय और सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ, मनुष्य और समाज के हित में परसाई ने प्रयुक्त किया है, वह विरल ही है। परसाई में व्यंग्य के सभी तेवर दिखाई देते हैं। अपने व्यंग्य बाणों से कभी वे प्रतिपक्षी की धज्जियाँ उड़ाते हैं तो कभी चिकोटी काट कर रह जाते हैं, कभी रस लेते हुए उसके झूठ और ढोंग को उजागर करते हैं, तो कभी उनका मखौल उड़ाते हैं, कभी मीठी छुरी से रेतते हैं, तो कभी उसे सरेआम नंगा कर देते हैं। इन सबके पीछे साधारण जन का दुख-दर्द और उसकी यातना ही होती है। 'वैष्णव की फिसलन' शीर्षक निबंध में आप देखेंगे कि वे किस प्रकार रस लेते हुए तथाकथित वैष्णव के ढोंग और छद्म को उद्घाटित करते हैं। निबंध का मूल पाठ आपके वाचन के लिए आगे दिया जा रहा है।

14.2 निबंध का वाचन

वैष्णव करोड़पति है। भगवान विष्णु का मंदिर। जायदाद लगी है। भगवान सूदखोरी करते हैं। ब्याज से कर्ज़ देते हैं। वैष्णव दो घंटे भगवान् विष्णु की पूजा करते हैं, फिर गादी-तकियेवाली बैठक में आकर धर्म को धंधे से जोड़ते हैं। धर्म धंधे से जुड़ जाय, इसी को 'योग' कहते हैं। कर्ज़ लेने वाले आते हैं। विष्णु भगवान के वे मुनीम हो जाते हैं। कर्ज लेने वाले से दस्तावेज लिखवाते हैं -

'दस्तावेज लिख दी रामलाल वल्द श्यामलाल ने भगवान विष्णु वल्द नामालूम को ऐसा जो कि -'

वैष्णव बहुत दिनों से विष्णु के पिता के नाम की तलाश में है, पर वह मिल नहीं रहा। मिल जाय तो वल्दियत ठीक हो जाय।

वैष्णव के नम्बर दो का बहुत पैसा हो गया है। कई एजेंसियाँ ले रखी हैं। स्टाकिस्ट हैं। जब चाहे माल दबाकर 'ब्लैक' करने लगते हैं। मगर दो घंटे विष्णु-पूजा में कभी नागा नहीं करते। सब प्रभु की कृपा से हो रहा है। उनके प्रभु भी शायद दो नंबरी हैं। एक नम्बरी होते तो ऐसा नहीं करने देते।

वैष्णव सोचता है - अपार नम्बर दो का पैसा इकट्ठा हो गया है। इसका क्या किया जाय? बढ़ता ही जाता है। प्रभु की लीला है। वही आदेश देंगे कि क्या किया जाय।

वैष्णव एक दिन प्रभु की पूजा के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा, 'प्रभु, आपके ही आशीर्वाद से मेरे पास इतना सारा दो नम्बर का धन इकट्ठा हो गया है। अब मैं इसका क्या करूँ? आप ही रास्ता बताइए। मैं इसका क्या करूँ? प्रभु, कष्ट हरो सबका!'

तभी वैष्णव की शुद्ध आत्मा से आवाज उठी, 'अधम, माया जोड़ी है, तो माया का उपयोग भी सीख! तू एक बड़ा होटल खोल। आजकल होटल बहुत चल रहे हैं।'

वैष्णव ने प्रभु का आदेश मानकर एक विशाल होटल बनवाया। बहुत अच्छे कमरे। खूबसूरत बाथरूम। नीचे लाण्ड्री। नाई की दूकान। टैक्सियाँ। बाहर बढ़िया लॉन। ऊपर टेरेस गार्डन।

और वैष्णव ने खूब विज्ञापन करवाया।

कमरे का किराया तीस रुपया रखा।

फिर वैष्णव के सामने धर्म-संकट आया। भोजन कैसा होगा? उसने सलाहकारों से कहा, 'मैं वैष्णव हूँ। शुद्ध शाकाहारी भोजन कराऊँगा। शुद्ध घी की सब्जी, फल, दाल, रायता, पापड़ वैगरह'।

बड़े होटल का नाम सुनकर बड़े लोग आने लगे। बड़ी-बड़ी कम्पनियों के एक्जीक्यूटिव, बड़े अफसर और बड़े सेठ।

वैष्णव संतुष्ट हुआ।

पर फिर वैष्णव ने देखा कि होटल में ठहरने वाले कुछ असंतुष्ट हैं।

एक दिन एक कम्पनी का एक्जीक्यूटिव बड़े तैश में वैष्णव के पास आया। कहने लगा, इतने महँगे होटल में हम क्या यह घास पत्ती खाने के लिए ठहरते हैं? यहाँ "नानवेज' का इंतजाम क्यों नहीं है?'

वैष्णव ने जवाब दिया, 'मैं वैष्णव हूँ। मैं गोश्त का इंतजाम अपने होटल में कैसे कर सकता हूँ?'

उस आदमी ने कहा, 'वैष्णव हो, तो ढाबा खोलो। आधुनिक होटल क्यों खोलते हो? तुम्हारे

वैष्णव ने कहा, 'यह धर्म-संकट की बात है। मैं प्रभु से पूछूँगा।'

उस आदमी ने कहा, 'हम भी बिजनेस में हैं। हम कोई धर्मात्मा नहीं हैं - न आप, न मैं।'

वैष्णव ने कहा, 'पर मुझे तो यह सब प्रभु विष्णु ने दिया है। मैं वैष्णव धर्म के प्रतिकूल कैसे जा सकता हूँ? मैं प्रभु के सामने नत-मस्तक होकर उनका आदेश लूँगा।'

दूसरे दिन वैष्णव साष्टांग विष्णु के सामने लेट गया। कहने लगा, 'प्रभु यह होटल बैठ जायगा। ठहरने वाले कहते हैं कि हमें यहाँ बहुत तकलीफ होती है। मैंने तो प्रभु, वैष्णव भोजन का प्रबंध किया है। पर वे मांस माँगते हैं। अब मैं क्या करूँ?'

वैष्णव की शुद्ध आत्मा से आवाज आयी, 'मूर्ख, गांधीजी से बड़ा वैष्णव इस युग में कौन हुआ है? गांधी का भजन है, 'वैष्णव जन तो तेणे कहिये, जे पीर परायी जाणे रे।' तू इन होटल मे रहने वालों की पीर क्यों नहीं जानता? उन्हें इच्छानुसार खाना नहीं मिलता। इनकी पीर तू समझ और उस पीर को दूर कर।'

वैष्णव समझ गया।

उसने जल्दी ही गोश्त, मुर्गा, मछली का इंतजाम करवा दिया।

होटल के ग्राहक बढ़ने लगे।

मगर एक दिन फिर वही एक्जीक्यूटिव आया।

कहने लगा, हाँ, अब ठीक है। मांसाहार अच्छा मिलने लगा। पर एक बात है।'

वैष्णव ने पूछा, 'क्या?'

उसने जवाब दिया, 'गोश्त के पचने की दवाई भी तो चाहिए।'

वैष्णव ने कहा, 'लवण भास्कर चूर्ण का इंतजाम करवा दूँ?'

एक्जीक्यूटिव ने माथा ठोंका।

कहने लगा, 'आप कुछ नहीं समझते। मेरा मतलब है - शराब। यहाँ बॉर खोलिए।'

वैष्णव सन्न रह गया। शराब यहाँ कैसे पी जायगी? मैं प्रभु के चरणामृत का प्रबंध तो कर सकता हूँ। पर मदिरा! हे राम!

दूसरे दिन वैष्णव ने फिर प्रभु से कहा, 'प्रभु, वे लोग मदिरा माँगते हैं। मैं आपका भक्त मदिरा कैसे पिला सकता हूँ?'

वैष्णव की पवित्र आत्मा से आवाज आयी, 'मूर्ख, तू क्या होटल बिठाना चाहता है? देवता सोमरस पीते थे। वही सोमरस यह मदिरा है। इसमें तेरा वैष्णव-धर्म कहाँ भंग होता है। सामवेद में 63 श्लोक सोमरस अर्थात् मदिरा की स्तुति में हैं। तुझे धर्म की समझ है या नहीं?'

वैष्णव समझ गया।

उसने होटल में 'बॉर' खोल दिया।

अब होटल ठाठ से चलने लगा। वैष्णव खुश था।

फिर एक दिन एक आदमी आया। कहने लगा, 'अब होटल ठीक है। शराब भी है। गोश्त भी है। मगर मरा हुआ गोश्त है। हमें जिंदा गोश्त भी चाहिए।'

वैष्णव ने पूछा, 'यह जिंदा गोश्त कैसा होता है?'

उसने कहा, 'कैबरे - जिसमें औरत नंगी होकर नाचती है।'

उस आदमी ने कहा, 'इसमें 'अरे बाप रे 'क। कोई बात नहीं। सब बड़े होटलों में चलता है। यह सुविधा कर दो तो कमरों का किराया बढ़ा सकते हो।'

वैष्णव ने कहा, मैं कट्टर वैष्णव हूँ। मैं प्रभु से पूछूँगा।'

दूसरे दिन फिर वैष्णव प्रभु के चरणों में था। कहने लगा, 'प्रभु, वे लोग कहते हैं कि होटल में नाच भी होना चाहिए। आधा नंगा या पूरा नंगा।'

वैष्णव की शुद्ध आत्मा से आवाज आयी, 'मूर्ख, कृष्णवतार में मैंने गोपियों को नचाया था! चीर-हरण तक किया था। तुझे क्या संकोच है?'

प्रभु की आज्ञा से वैष्णव ने 'कैबरे' भी चालू कर दिया।

अब कमरे भरे रहते थे - शराब, गोश्त और कैबरे।

वैष्णव बहुत खुश था। प्रभु की कृपा से होटल भरा रहता था।

कुछ दिनों बाद एक ग्राहक ने 'बेयरा' से कहा, 'इधर कुछ और भी मिलता है?'

बेयरा ने पूछा, 'और क्या साब?'

ग्राहक ने कहा, 'अरे यही मन बदलाने की कुछ। कोई ऊँचे किस्म का माल मिले तो लाओ।'

बेयरा ने कहा, 'नहीं साब, इस होटल में यह नहीं चलता।'

ग्राहक वैष्णव के पास गया। बोला, 'इस होटल में कौन ठहरेगा?'

वैष्णव ने कहा, 'कैबरे तो है साहब!'

ग्राहक ने कहा, 'कैबरे तो दूर का होता है। पास का चाहिए, गर्म माल, कमरे में।'

वैष्णव फिर धर्म-संकट में पड़ गया।

दूसरे दिन वैष्णव फिर प्रभु की सेवा में गया। प्रार्थना की, 'कृपा-निधान, गाहक लोग नारी माँगते हैं- पाप की खान! मैं तो इस पाप की खान से जहाँ तक बनता है, दूर रहता हूँ। अब मैं क्या करूँ?'

वैष्णव की शुद्ध आत्मा से आवाज आयी, 'मूर्ख, यह तो प्रकृति और पुरुष का संयोग है। इसमें क्या पाप और पुण्य! चलने दे।'

वैष्णव ने बेयरो से कहा, 'चुपचाप इंतजाम कर दिया करो। जरा पुलिस से बचकर। 25 फीसदी भगवान की भेंट ले लिया करो।'

अब वैष्णव का होटल खूब चलने लगा।

शराब, गोश्त, कैबरे और औरत।

वैष्णव धर्म बराबर निभ रहा है।

इधर यह भी चल रहा है।

वैष्णव ने धर्म को धंधो से खूब जोड़ा है।

बोध प्रश्न

आपने व्यंग्य निबंध पढ़ लिया होगा। अब निम्निलिखित प्रश्नों का सही उत्तर नीचे दिए गए

कोष्टक में उपसंख्या लिखकर दें और अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाकर जाँच लें।

1) वैष्णव करोड़पति कैसे बन गया था?

   क) अपनी कड़ी मेहनत से।

   ख) भगवान विष्णु की नियमित पूजा से।

   ग) सूदखोरी ओर कालाबाजारी से।

   घ) अपने अच्छे भाग्य से। ( )

2) लेखक ने 'धर्म को धंधे से जोड़ने' से किस आशय की अभिव्यक्ति की है?

   क) धंधे को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए।

   ख) धंधे में अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए।

   ग) धंधे को बढ़ाने में धर्म का दुरुपयोग करने के लिए।

   घ) धार्मिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए। ( )

3) जब कर्ज लेने वाले आते हैं तो वैष्णव कौन-सा रूप धारणा करता है?

   क) गद्दी का मालिक बन जाता है।

   ख) भगवान विष्णु का मुनीम बन जाता है।

   ग) एक ईमानदार व्यवसाई बन जाता है।

   घ) धर्मात्मा व्यक्ति बन जाता है। ( )

4) अपने पास नम्बर दो का बहुत अधिक पैसा एकत्र हो जाने पर उसे सफेद (नं० 1 का) करने की वैष्णव की चिन्ता के समाधान के लिए भगवान विष्णु ने क्या आदेश दिया?

   क) गरीब दुखियों की सहायता करने का।

   ख) एक बड़ा होटल खोलने का।

   ग) पुण्य-कार्य के लिए मंदिर बनवाने का।

   घ) धर्मशाला बनवाने का। ( )

14.3 निबंध का सार

इस निबंध को पढ़कर आपने समझ लिया होगा कि इसमें आरंभ से अंत तक एक करोड़पति ढोंगी वैष्णव (विष्णु भगवान के भक्त) के लगातार अधःपतन का व्यंग्य-चित्र प्रस्तुत किया गया है। करोड़पति वैष्णव ने भगवान विष्णु का एक भव्य मंदिर बनवाकर अपनी सारी जायदाद उनके नाम कर दी है। इसलिए सूदखोरी से लेकर कालाबाजारी के सारे काम उन्हीं के नाम पर होते हैं। वैष्णव नियमित रूप से दो घंटे विष्णु भगवान की पूजा करता है। पूजा के बाद मसनद लगे गद्दीदार बिस्तरे वाली बैठक में आसन लगाकर वह धर्म से धंधो को जोड़ने की साधना करता है। धर्म से धंधे को जोड़ने को 'योग' की संज्ञा देकर लेखक ने धर्म की आड़ में भ्रष्टाचार करने वाले व्यवसाइयों पर करारा व्यंग्य किया है। वैष्णव के पास जब कर्ज लेने वाले आते हैं तो वह भगवान विष्णु का मुनीम बन जाता है। कर्ज लेने वाले से खाते में यह दर्ज करवाया जाता है - 'दस्तावेज लिख दी रामलाल वल्द श्यामलाल ने भगवान विष्णु वल्द नामालूम हो...।' विष्णु भगवान की वल्दियत इस लिए नहीं दर्ज की जाती क्योंकि उनके पिता का नाम मालूम नहीं है। मालूम होने पर ही वल्दियत ठीक होगी। इस कथन के पीछे भी धार्मिक पाखंड पर एक गहरा व्यंग्य छिपा हुआ है।

अपनी काली करतूत के कारण वैष्णव के पास काफी पैसा एकत्र हो गया है। इन पैसों से वह कई एजेंसियाँ लेकर बहुत बड़ा आढ़ती (स्टाकिस्ट) बन गया है। माल दबाकर मनमानी चोरबाजारी को भी वह प्रभु की कृपा ही मानता है। इस पर टिप्पणी करते हुए लेखक कहता है कि 'उसके प्रभु भी दो नम्बरी बन गए हैं।' नम्बर दो के पैसे को नंबर एक का बनाने के लिए वैष्णव प्रभु से प्रार्थना करता है कि 'अब मैं इसका क्या करूँ?..... प्रभु कष्ट हरो सबका।' वैष्णव की शुद्ध आत्मा से आवाज़ उठती है कि 'अधम, माया जोड़ी है तो माया का उपयोग भी सीख! तू एक बड़ा होटल खोल ले।' वैष्णव इसे प्रभु का आदेश मानकर एक शानदार होटल बनवाता है। आधुनिक सुख-सुविधाओं से पूर्ण सुंदर कमरे, बाथरूम और नीचे लांड्री, नाई की दूकान, टैक्सियों की व्यवस्था के साथ ही बाहर खूबसूरत लम्बे-चोड़े लॉन से होटल की शान में कई गुना वृद्धि हो जाती है।

अपनी तथाकथित धार्मिक प्रकृति के कारण वैष्णव होटल में विशुद्ध शाकाहारी भोजन की व्यवस्था करता है, जिसमें शुद्ध घी की सब्जी, दाल, फल, रायता, पापड़ आदि सम्मिलित हैं। होटल का नाम चल पड़ता है। बड़ी-बड़ी कपंनियों के कार्यकारी अधिकारी, ऊँचे दर्जे के सरकारी अधिकारी, बड़े-बड़े सेठ आने लगते हैं। तीस रुपए प्रति कमरे किराया और खान-पान की व्यवस्था की आमदनी से वैष्णव संतुष्ट है। लेकिन होटल में ठहरने वाले कुछ बड़े लोग अब भी असंतुष्ट है। एक बड़ा कार्यकारी अधिकारी तैश में आकर वैष्णव को फटकारता है कि 'इतने महँगे होटल में क्या हम घास-पात खाने के लिए ठरहते हैं? यहाँ 'नान वेज' की व्यवरथा क्यों नहीं?' वैष्णव के सामने धर्म-संकट उपस्थित हो जाता है। इस संकट से मुक्ति के लिए वह प्रभु विष्णु के चरणों में लेट कर प्रार्थना करता है कि यह होटल बैठ जाएगा। ठहरने वालों को यहाँ बड़ी तकलीफ होती है। वे शुद्ध वैष्णव भोजन की जगह मांस माँगते हैं। मैं क्या करूँ? वैष्णव की शुद्ध आत्मा से सधी हुई आवाज़ आती है, 'गांधी जी से बड़ा वैष्णव इस युग में कौन हुआ है। उनका प्रसिद्ध भजन है, 'वैष्णवजन तो तेणे कहिए, जे पीर पराई जाणे रे'। तू होटल में रहने वालों की 'पीर' समझ और उसे दूर कर। इससे बड़ा वैष्णव धर्म क्या होगा? 'प्रभु के आदेश से वैष्णव ने जल्दी ही गोश्त, मुर्गा, मछली आदि की व्यवरथा करवा दी। ग्राहक बढ़ने लगे। लेकिन एक दिन फिर उसी कार्यकारी अधिकारी ने शिकायत की कि मांसाहार की व्यवरथा तो ठीक है, लेकिन उसके पचने का भी इंतजाम होना चाहिए। वैष्णव द्वारा लवण भास्कर चूर्ण के इंतजाम की बात सुनकर कार्यकारी अधिकरी ने माथा ठोंक लिया। उसकी ना समझी पर तरस खाते हुए कहा, 'मेरा मतलब शराब से है। यहाँ 'बार' खोलिए।' यह सुनकर वैष्णव सन्न रह गया। यह दूसरा गंभीर संकट था। वैष्णव ने प्रभु के चरणों में गुहार की कि आपके चरणामृत की जगह मैं मदिरा कैसे पिला सकता हूँ? उसकी शुद्ध आत्मा से आवाज आयी कि 'मूर्ख, तू क्या होटल बिठाना चाहता है? देवता सोमरस पीते थे। वही सोमरस मदिरा है। इसमें तेरा वैष्णव धर्म कहाँ भंग होता है। सामवेद के 63 श्लोक सोमरस अर्थात् मदिरा की स्तुति में है। तुझे धर्म की समझ है या नहीं? धर्मात्मा वैष्णव की समझ में आ गया। होटल में 'बार' खोल दिया गया। होटल को ठाट से चलते देख वैष्णव खुश हो गया।

होटल-व्यवसाय केवल 'बार' तक ही सीमित नहीं रहता। फिर 'मरे हुए गोश्त' की जगह 'जिंदा गोश्त' अर्थात 'कैबरे' की बात उठी, जिसमें औरतों का नग्न नृत्य होता है। बहुत सोच-समझ के बाद वैष्णव ने प्रभु के चरणों में नतमस्तक होकर अपनी समस्या रखी। उसकी शुद्ध आत्मा से आवाज आयी कि 'मूर्ख कृष्णावतार में मैंने गोपियों को नचाया था, उनका चीर हरण किया था। तुझे क्या संकोच है।' प्रभु के आदेश से 'कैबरे' भी शुरू हो गया। शराब, गोश्त और कैबरे की व्यवस्था से होटल के कमरों का किराया काफी बढ गया, सभी कमरे भरे रहने लगे। लेकिन आधुनिक होटल की मर्यादा केवल 'कैबरे' तक ही सीमित नहीं है। 'कैबरे' के बाद नारी देह की मांग आयी। इस धर्म संकट के समाधान के लिए वैष्णव ने पुनः प्रभु चरणों का सहारा लिया। उसकी शुद्ध आत्मा से आवाज आई, 'मूर्ख यह तो प्रकृति और पुरुष का संयोग है। इसमें क्या पाप और पुण्य! चलने दे।' प्रभु के इस आदेश पर वैष्णव ने बेयरों से कह दिया कि पुलिस से बचकर चुपचाप इंतजाम कर दिया करो। भगवान की भेंट का पच्चीस प्रतिशत ले लिया करो। वैष्णव पुनः सफेद से काले धंधे पर आ गया। शराब,

गोश्त, कैबरे और औरत के योग से होटल खूब चलने लगा। वैष्णव धर्म भी बरकरार रहा। इस प्रकार वैष्णव ने धर्म को धंधे से अच्छी तरह जोड़ कर अपनी 'योग साधना' का भरपूर परिचय दिया। इस प्रकार निबंध में आदि से अंत तक व्यवसाई वर्ग के प्रतिनिधि वैष्णव के धार्मिक ढोंग और प्रपंच का रस लेते हुए भंडाफोड़ किया गया है।

13.4 संदर्भ सहित व्याख्या

यहाँ निबंध के कुछ महत्वपूर्ण अंशों की ससंदर्भ व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, जिनसे आपको निबंध समझने और उसकी व्याख्या करने में सहायता मिलेगी।

उद्धरण 1:

'वैष्णव करोड़पति है। भगवान विष्णु का मंदिर है। जायदाद लगी है। भगवान सूदखोरी करते हैं। ब्याज से कर्ज देते हैं। वैष्णव दो घंटे भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, फिर गादी तकिए वाली बैठक में आकर धर्म को धंधे से जोड़ते हैं। धर्म धंधे से जुड जाए, इसी को 'योग' कहते हैं। कर्ज लेने वाले आते हैं। विष्णु भगवान के मुनीम हो जाते हैं।'

संदर्भः प्रस्तुत उद्धरण स्वर्गीय हरिशंकर परसाई के व्यंग्य निबंध 'वैष्णव की फिसलन' से लिया गया है। निबंध की इन आरंभिक पंक्तियों में लेखक ने सूदखोर-व्यापारी, करोड़ों के मालिक तथाकथित वैष्णव (विष्णु भगवान का भक्त) का टूटे-फूटे अधूरे वाक्यों में अत्यंत मार्मिक व्यंग्य-चित्र प्रस्तुत किया है।

व्याख्याः लाखों-करोड़ों के मालिक विष्णु भक्त व्यवसायी ने विष्णु भगवान का भव्य मंदिर बनवा कर बेइमानी से अर्जित की गई अपनी सारी सम्पत्ति मंदिर के नाम कर दी है। इस लिए उसका सारा कारोबार भगवान करते हैं। सूदखोरी या ब्याज पर पैसे उधार देने का कार्य वैष्णव ने भगवान के जिम्मे कर दिया है। वह तो उपासना गृह में दो घंटे तक भगवान की निष्ठापूर्वक (झूठी या मक्कारी से भरी) पूजा करने के बाद तकिए वाली सजी बैठक (गद्दी) में आकर धर्म को धंधे से जोड़ने मात्र का कार्य करता है। इस रूप में वह परम साधक बन जाता है। धर्म धंधे से जुड़ सके, इसी को वह 'योग' मानता है। इस योग-साधना में वह परम निपुण है। जब ब्याज पर उधार लेने वाले उसकी गद्दी पर आते हैं तो वह भगवान विष्णु का मुनीम बनकर काम करता है। कहने का तात्पर्य यह कि वह अपनी सम्पत्ति का मालिक न रहकर भगवान का अदना सेवक बन कर रहता है।

विशेषः

1) छोटे-छोटे, प्रायः अधूरे वाक्यों का प्रयोग। कहीं कर्ता तो कहीं क्रिया गायब है। फिर भी व्यंजना से भरपूर भाषा का प्रयोग इस उद्धरण में हुआ है।

2) पूरे निबंध को सही ढंग से समझने के लिए यह उद्धरण बीज या कुंजी का काम करता है।

3) धर्म को धंधे से जोड़ने को 'योग' की संज्ञा देकर लेखक ने भ्रष्ट व्यवसायियों की अत्यंत घिनौनी मनोवृत्ति पर करारी चोट की है।

उद्धरण 2:

वैष्णव की शुद्ध आत्मा से आवाज़ आयी, 'मूर्ख, गांधी जी से बड़ा वैष्णव इस युग में कौन हुआ?' गांधी जी का भजन है, 'वैष्णव जन तो तेणे कहिए, जे पीर परायी जाणे रे।' तू इस होटल में रहने वालों की पीर क्यों नहीं जानता? उन्हें इच्छानुसार खाना नहीं मिलता। इनकी पीर तू समझ और उस पीर को दूर कर।"

संदर्भः यह गद्यांश हरिशंकर परसाई के व्यंग्य निबंध 'वैष्णव की फिसलन' से लिया गया है।

उच्च अधिकारी और बड़े लोग असंतुष्ट हैं। एक उच्च अधिकारी तैश मे आकर वैष्णव को फटकारने लगता है कि इतने बड़े होटल में मांसाहार का इंतजाम क्यों नहीं है? वैष्णव अपने धर्म-संकट की बात कहकर इस पाप-कर्म से छुटकारा पाना चाहता है। लेकिन उच्च अधिकारी के दबाव से वह विष्णु भगवान के चरणों में लेटकर प्रार्थना करता है कि होटल मे ठहरने वालों की तकलीफ के विषय में वह क्या करे? उसकी शुद्ध आत्मा के रूप में भगवान विष्णु जो समाधानपूर्ण आदेश देते हैं, उसे अत्यंत व्यंग्यात्मक ढंग से इस उद्धरण में प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्याः अपनी प्रार्थना के उत्तर में वैष्णव की शुद्ध आत्मा (जो व्यंग्य में निहित विपरीत लक्षण से अत्यंत मलिन और स्वार्थलिप्त है) से आवाज आती है कि तुम मूर्ख हो। गांधी जी से महान वैष्णव इस युग में पैदा ही नहीं हुआ। उनके प्रसिद्ध भजन 'वैष्णव जन तो तेणे कहिए, जे पीर पराई जाणे रे' - का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उसकी तथाकथित शुद्ध आत्मा का आदेश होता है कि 'तू होटल मे ठहरने वालों की पीड़ा को क्यों नहीं समझता?' उन्हें इच्छानुसार भोजन नहीं मिल पा रहा है। उनकी इस पीड़ा को तू समझ और उसे तुरंत दूर कर। इस तरह अपनी शुद्ध आत्मा अर्थात् स्वार्थ के वशीभूत मलिन आत्मा की आवाज को विष्णु भगवान का आदेश मानकर वह होटल में मांसाहार के लिए मांस, मुर्गा, मछली आदि की तुरंत व्यवस्था कर देता है। अतः धर्म की झूठी आड़ में उसका होटल अच्छी तरह चलने लगता है।

विशेषः

1) यहाँ 'वैष्णव की शुद्ध आत्मा' पद मलिन और स्वार्थ लिप्त आत्मा का अर्थ देता है।

2) इस उद्धरण में नरसी मेहता द्वारा रचित और लोगमंगल के महान साधक महात्मा गांधी के प्रिय भक्तिगीत का वैष्णव द्वारा अपने हित में दुरुपयोग किया गया है। इसके माध्यम से लेखक ने सिद्ध किया है कि मानवता की महान-से-महान उपलब्धियों की भी व्यावसायिक वर्ग आड़ लेकर अपने कुकृत्य को सफलतापूर्वक छिपा सकता है।

अभ्यास

1) निम्नलिखित गद्यांश के नीचे रिक्त स्थान में संदर्भ सहित व्याख्या करें -

"वैष्णव की पवित्र आत्मा से आवाज आयी, 'मूर्ख, तू क्या होटल बिठाना चाहता है? देवता सोमरस पीते थे। वही सोमरस यह मदिरा है। इसमें तेरा वैष्णव-धर्म कहाँ भंग होता है। सामवेद में 63 श्लोक सोमरस अर्थात् मदिरा की स्तुति में है। तुझे धर्म की समझ है या नहीं?"

संदर्भः .....

.....

.....

.....

.....

.....

व्याख्याः.....

.....

.....

.....

विशेषः .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

14.5 निबंध का कथ्य या उसकी अंतर्वस्तु

आपने इस निबंध के साथ ही उसके सार को भी पढ़ लिया है। सार को पढ़ते हुए आपको लगा होगा कि निबंध में कही गयी बहुत सी बातों में काफी कुछ जोड़कर लिखना पड़ा है और कई बातें छूट भी गयी हैं। बावजूद इसके सार लम्बा हो गया है, जो सार लेखन की प्रकृति और उसके स्वरूप से आपको भिन्न भी लग सकता है। इसका प्रमुख कारण है, रचना में प्रयुक्त व्यंग्य-योजना। अतः अधिकांशतः जो कहा गया है, उसका अर्थ विपरीत लक्षण से उलटा हो जाता है, अर्थात् इस निबंध में अभिधार्थ की फिसलन' में इस तथ्य को आदि से अंत तक देखा जा सकता है। अपने कथ्य को परसाई जी ने इसी रूप में प्रस्तुत किया है।

व्यवसाइयों द्वारा धर्म को अपने धंधे से जोड़ने की प्रवृत्ति का पर्दाफाश करना इस निबंध का मुख्य उद्देश्य है। करोड़पति वैष्णव ने जिस प्रकार स्वनिर्मित विष्णु मंदिर के नाम अपनी सारी जायदाद लगा दी है, उसी प्रकार अपने कुकृत्यों को भी उन्हीं के नाम कर वह अपने को पाप मुक्त मान लेता है। लेकिन इस निबंध में वैष्णव एक व्यक्ति मात्र न होकर समूचे व्यावसायिक और औद्योगिक वर्ग का प्रतिनिधि बन कर आया है। वर्तमान युग में यह ऐसा वर्ग है, जिसकी तिजोरी में धन ही नहीं,वरन् धर्म, राजनीति, अर्थनीति और प्रतिष्ठा भी बंद हो जाती है। यहाँ तक कि संस्कृति एव संस्कृति कर्मियों, कला एवं कलाकारों को भी वह अपनी तिजोरी के चक्कर में फँसाए रखने का प्रयास करता है। एक वामपंथी जागरूक व्यक्ति के रूप में परसाई जी ने इन सभी स्थितियों पर गहन चिंतन किया है। एक रचनाकार या लेखक के रूप में उन्होंने पूरी सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ इन स्थितियों की वास्तविकताओं को व्यंग्य के सहारे उजागर करते हुए पाठक को जागरूक बनाकर सामाजिक परिवर्तन में अपनी भूमिका निभाई है। 'वैष्णव की फिसलन' शीर्षक संग्रह के 'लेखकीय' में परसाई जी ने आरंभ में ही लिखा है कि 'व्यंग्य की प्रतिष्ठा इस बीच साहित्य में काफी बढ़ी है - वह शूद्र से क्षत्रिय मान लिया गया है। व्यंग्य, साहित्य में ब्राह्मण बनना भी नहीं चाहता क्योंकि वह कीर्तन करता है।'

परसाई जी का उपर्युक्त कथन उनके व्यंग्य-प्रयोग की दिशा और दशा - दोनों का संकेत करता है। राजनीतिक जोड़-तोड़ हो या साहित्यिक जोड़-तोड़, प्रशासनिक भ्रष्टाचार हो चाहे व्यावसायिक औद्योगिक लूट-खसोट - सर्वत्र उन्होंने व्यंग्य का एक कारगर हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है। व्यंग्य को हास्य के साथ जोड़कर इसे प्रायः मनोरंजन, हँसने-हँसाने का साधन माना जाता रहा है। इसलिए साहित्य के क्षेत्र में उसे शूद्र का दर्जा ही मिल पाया था। लेकि कबीर, भारतेंदु, निराला, नागार्जुन से लेकर परसाई तक व्यंग्य की एक स्वस्थ परंपरा ने उसे शूद्र से उठाकर क्षत्रिय बना दिया है। कबीर की भांति निर्मम प्रहार परसाई के व्यंग्य की प्रमुख विशेषता है। 'वैष्णव की फिसलन' संग्रह की अंतिम पंक्तियों में कबीर का गौरवगान करते हुए परसाई जी ने लिखा है, 'कबीर, जिसने अपनी जमीन तोड़ी, भाषा तोड़ी और नयी ताकतवर भाषा गढ़ी, सड़ी-गली मान्यता को आग लगाई, जाति और धर्म के भेद को लात मारी, सारे पाखंड का पर्दाफाश किया, जो पलीता लेकर कुसंस्कारों को जलाने के लिए घूमा करता था। वह योद्धा कवि था।' (पृ.112)

वस्तुतः हरिशंकर परसाई भी उसी तरह के योद्धा साहित्यकार रहे हैं। शोषित-दलित और उत्पीडित वर्ग का पक्ष लेकर भ्रष्टाचार में लिप्त उच्च शोषक वर्ग के विरुद्ध उन्होंने कठोर संघर्ष किया है। आपके गहन अध्ययन के लिए निर्धारित व्यंग्य निबंध में समाजव्यापी विकृति के एक पक्ष 'धर्म और धंधे' को विषय बनाकर लोभ-लाभ की प्रवृत्ति से संचालित व्यवसाय की वास्तविकता का पर्दाफाश करने के साथ ही उन्होंने धर्म की असामाजिक भूमिका पर भी कटाक्ष किया है। यही निबंध की मूल अंतर्वस्तु है, जिसे आप निबंध का कथ्य भी कह सकते हैं।

14.6 चरित्र-विधान

प्रस्तुत निबंध का चरित्र-विधान भी उसकी अंतर्वस्तु को समझने में आपकी पर्याप्त सहायता कर सकता है। इस निबंध से करोड़पति वैष्णव मात्र व्यक्ति न होकर एक अच्छे-खासे व्यावसायिक समुदाय का प्रतिनिधि है। उसी के क्रिया-कलाप से निबंध का आरंभ और अंत होता है। धर्म का सहारा लेकर विभिन्न हथकंडों से धन एकत्र कर वह एक बड़े होटल का निर्माण करता है। इसका एक बहुत ही रोचक चित्र व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इस प्रक्रिया में तथाकथित धर्म और उसके प्रमुख आधार विष्णु भगवान का भी सांकेतिक ढंग से मखौल उड़ाया गया है। वे स्वयं कर्ज देते हैं, ब्याज लेते हैं और दो नंबर का धंधा करते हैं। क्योंकि वैष्णव (धूर्त व्यवसायियों का प्रतिनिधि) तो उनका मुनीम मात्र है। इस तरह की मान्यता व्यवसाइयों की क्रूरता को उजागर करती है।

होटल के विकास-विस्तार में उपभोक्तावाद और माँग तथा पूर्ति के अमानवीय बाजार-नियम की क्रूरता को भी धर्म और शुद्ध आत्मा के झीने पर्दे से ढकने का प्रयास कर वैष्णव अपनी आत्मा की मलिनता को ही उजागर करता है। क्योंकि यह झीना पर्दा व्यंग्यकार की तीखी नजरों से छिप नहीं पाता। शुद्ध शाकाहारी भोजन की व्यवस्था का दम भरने वाला वैष्णव लोभ-लाभ की भावना से प्रेरित होकर क्रमशः मांस, मदिरा, कैबरे और अंत में औरत के शरीर के धंधे तक उतर आता है। यहाँ सब कुछ उसकी तथाकथित शुद्ध आत्मा, अर्थात् भगवान विष्णु के आदेश से धार्मिक कर्म के रूप में होता है। कहने का तात्पर्य यह कि ऐसे लोग ही शुद्ध आत्मा, अंतरात्मा, भगवान की लीला, भगवान की मर्जी आदि का ढोल पीटकर अपने कुकृत्यों को भी गौरवान्वित करते हैं। लोभ-लाभ के वशीभूत ऐसे लोग बुरे-से-बुरे कार्य करने के बाद भी पश्चाताप के लिए प्रेरित न होकर अपने कार्यों का औचित्य सिद्ध करने लग जाते हैं। इसे ही निबंध की मूल अंतर्वस्तु या कथ्य कहा जा सकता है, जो वैष्णव के चरित्र के माध्यम से प्रस्तुत हुई है।

14.7 लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति

निबंध-रचना में, विशेषकर व्यंग्यात्मक निबंधों में साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक अवकाश रहता है। हरिशंकर परसाई के संदर्भ में यह बात और अधिक मुखर होकर सामने आती हैं। उनकी अधिकांश व्यंग्यात्मक रचनाएँ एक साहित्यिक विधा की पूर्वनिर्धारित सीमाओं में बँधी नहीं रहती। कभी वे निबंध से कहानी की सीमा में पहुँच जाती हैं, तो कभी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और प्रशासनिक टिप्पणी का आभास देने लगती हैं। फलस्वरूप किसी भी चुने हुए विषय पर वे विषय का परिचय, विषय की व्याख्या या उसका तथ्यात्मक लेखा-जोखा न देकर व्यंग्य के सहारे अपनी आलोचनात्मक दृष्टि का ही अधिक परिचय देते हैं।

'वैष्णव की फिसलन' शीर्षक निबंध प्रायः निबंध की सीमा का उल्लंघन कर कहानी के क्षेत्र में प्रवेश करते हुए अंततः एक आलोचनात्मक टिप्पणी का रूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार 'भोला राम का जीव' प्रशासनिक लाल फीताशाही की कहानी मात्र न रहकर एक समाजनिष्ठ व्यक्ति की प्रशासनिक भ्रष्टाचार पर टिप्पणी भी बन जाती है। आपके लिए

निर्धारित संग्रह का कहानी नुमा निबंध 'राजनीति का बटवारा', एक समस्या केंद्रित निबंध 'अकाल-उत्सव', 'रामचरित मानस' की चौथी शती मनाए जाने के अवसर पर 'कबीर समारोह क्यों नहीं' शीर्षक लेख आदि बहुत सी रचनाएँ अपनी विधागत विशेषताएँ छोड़कर एक नई विधा का आभास देती हैं। यहाँ आप यह ध्यान रखें कि साहित्यिक विधाओं की मर्यादा का ही उल्लंघन परसाई के रचनाशील व्यक्तित्व की विशेषता नहीं है। उन्होंने अपने युग की सड़ी-गली मान्यता और दीमक लगी सभी मर्यादाओं के प्रति सार्थक विद्रोह किया है। यह विद्रोह-भाव ही उनके व्यक्तित्व की मूलभूत विशेषता है, जो उनकी अधिकांश रचनाओं में अत्यंत मुखर होकर व्यक्त हुआ है। आपके पाठ्यक्रम में निर्धारित निबंध 'वैष्णव की फिसलन' भी उपर्युक्त तथ्य का प्रमाण है। विष्णु भगवान को सूदखोर, कालाबाजारी या नंबर दो का धंधा करने वाला बताना विरले लोगों का ही काम है। किसी भी स्थिति में अन्याय और कुरीतियों से समझौता न करने वाले परसाई जी का अक्खड़ व्यक्तित्व उनकी सभी रचनाओं में उजागर हुआ है। उनकी लड़ाई जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वस्थ मूल्यों की रक्षा के लिए रही है। इस प्रक्रिया में वे जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त लोक-विरोधी तत्वों पर गिन-गिन कर तीखा प्रहार करते रहे हैं। इस प्रकार वे भारत की बहुसंख्यक बदहाल जनता के पक्ष में संघर्ष करने वाले अप्रतिम योद्धा सिद्ध होते हैं। यह व्यक्तित्व उनके निबंध में पूरी तरह उजागर हुआ है।

बोध प्रश्न

अब तक आपने निर्धारित निबंध और उसकी बहुत सी विशेषताओं का अध्ययन कर लिया होगा। इनसे जुड़े हुए कुछ प्रश्न नीचे दिए जा रहे हैं। विश्वास है, उनका समुचित उत्तर आप दे सकेंगे। उत्तर देने के बाद इकाई में दिए गए उत्तरों से मिलाकर उनकी जाँच कर लें।

5) 'व्यंग्य शूद्र से क्षत्रिय बन गया है' - इस कथन से लेख का क्या तात्पर्य है? सही उत्तर को क्रम संख्या के माध्यम से कोष्ठक में निर्दिष्ट करें -

   क) व्यंग्य समाज में शूद्रों के साथ भेद-भाव करता है।

   ख) निर्बल लोगों का शोषण करता है।

   ग) अन्याय के विरुद्ध पीड़ित लोगों की रक्षा करता है।

   घ) वह साहित्य में उपेक्षित न रहकर प्रतिष्ठा का अधिकारी हो गया है। ( )

6) निबंध में 'वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीर पराई 'जाणे रे' - भजन का उपयोग किस कार्य के लिए किया गया है? सही उत्तर को कोष्ठक में निर्दिष्ट करें -

   क) सबकी पीड़ा को दूर करने के लिए।

   ख) दीन दुखियों की भलाई के लिए।

   ग) होटल में ठहरने वाले बड़े लोगों की परेशानी को दूर करने के लिए मांसाहार की व्यवस्था के लिए।

   घ) लोकमंगल के कार्य के लिए। ( )

7) निबंध में कृष्णलीला के संदर्भ में गोपियों के नृत्य और चीरहरण के प्रसंग का उल्लेख किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया गया है?

   क) धार्मिक भावना जगाने के लिए।

   ख) लोकरंजन के लिए।

   ग) होटल में कैबरे की व्यवस्था के लिए।

   घ) सांस्कृतिक विरासत से परिचय कराने के लिए। ( )

8) पठित सामग्री के आधार पर बताएँ कि समाज में कौन से लोग हैं, जो शुद्ध आत्मा, अंतरात्मा, भगवान की लीला, भगवान की मर्जी का ढोल अधिक पीटते हैं। निम्नलिखित में से सही उत्तर का कोष्ठक में निर्देश करें -

क) धार्मिक प्रवृत्ति के लोग।

ख) नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने वाले लोग।

ग) धर्म को धंधे से जोड़ने वाले व्यावसायिक लोग।

घ) समाज-सुधार का कार्य करने वाले लोग। ( )

9) हरिशंकर परसाई के निबंधों में उनकी कौन-सी दृष्टि सर्वाधिक प्रमुखता से व्यक्त हुई है? सही उत्तर का कोष्ठक में निर्देश करें -

क) समन्वयवादी दृष्टि।

ख) आलोचनात्मक प्रहार की दृष्टि।

ग) नैतिकतावादी दृष्टि।

घ) सामाजिक व्यवहार कुशलता की दृष्टि। ( )

14.8 संरचना-शिल्प

आपने इस निबंध को पढ़ने तथा इसकी बहुत सारी विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करने के बाद इसकी रचना-पद्धति और प्रकृति में एक नयापन देखा होगा। यहाँ निबंध के, विशेषकर व्यंग्यात्मक निबंध के रचना-शिल्प पर विचार करते हुए हम उपर्युक्त नयेपन की ओर भी संकेत करते चलेंगे। जहाँ तक निबंध के शाब्दिक अर्थ का संबंध है, वह एक बंधी हुई और अत्यंत सुगठित रचना का संकेतक है। (निः=विशेष, बंध=बँधा या बँधी हुई) अर्थात् विशेष रूप से बंधी हुई या सुगठित रचना। लेकिन निबंध-रचना की निर्धारित सीमा का त्याग कर परसाई कहानी के क्षेत्र में प्रवेश कर जाते हैं। अतः 'वैष्णव की फिसलन' में चरित्र-विधान और संवाद योजना के कारण कहानी का गुण भी आ जाता है।

निबंध के संबंध में जो दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य है, वह उसकी भाषा है। निबंध को गद्य की कसौटी माना गया है। निबंधकार विषय के विवेचन-विश्लेषण में पूर्ण स्वतंत्रता की छूट ले सकता है, फिर भी भाषा-प्रयोग के संबंध में अधिक स्वतंत्रता का उपयोग वह नहीं कर सकता। लेकिन इस निबंध के आरंभ में ही आप देखेंगे कि खंडित और अधूरे वाक्यों, कर्ता-क्रिया संबंधी नियमों की अवहेलना द्वारा भाषा संबंधी सीमा को भी परसाई जी ने तोड़ा है। इस प्रकार वे निबंध के शाब्दिक अर्थ, उसकी शिल्पगत और भाषागत मान्यताओं की सीमा को लांघते हुए दिखायी देते हें। इस दृष्टि से उनमें आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे महान विषयनिष्ठ निबंधकार और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे महान व्यक्तिनिष्ठ और ललित निबंधकार से पर्याप्त भिन्नता मिलेगी। इस भिन्नता के बावजूद हिंदी के जातीय गद्य, खड़ी बोली की सम्पूर्ण क्षमता, ऊर्जा और जुझारुपन, प्रसंगानुकूल शब्दों का खुला चयन, अपनी पूरी विविधता के साथ परसाई के यहाँ मिलेगा। अन्य निबंधकारों से भिन्नता का प्रमुख कारण है, परसाई जी की भाषा-शैली पर व्यंग्यात्मकता का अत्यधिक दबाव। इसे आप उनकी भाषा-शैली की अलग-अलग विशेषताओं के विवेचन-विश्लेषण में आसानी से समझ सकते हैं।

14.8.1 शैली

हरिशंकर परसाई की शैली पर विचार करने के लिए आपको भाव प्रधान और विचार प्रधान तथा व्यक्तिनिष्ठ और विषयनिष्ठ जैसी निबंध की कोटियों या श्रेणियों को छोड़ना पड़ेगा।

इसके साथ ही निबंध के लिए प्रचलित भावात्मक, वर्णनात्मक और विवेचनात्मक शैली जैसी शैलीगत सीमाओं के बंधनों से भी मुक्ति प्राप्त करनी होगी। परसाई के निबंधों को अगर किसी शैली के अंतर्गत समाविष्ट करना है तो उसे व्यंग्यात्मक शैली माना जा सकता है। वर्णन-विवरण, भावावेश और व्याख्या - तीनों से वे अपने को बचाते हैं। उदाहरण के लिए निबंध की आरंभिक पंक्तियाँ देखें - 'वैष्णव करोड़पति है। भगवान विष्णु का मंदिर। जायदाद लगी है। भगवान सूदखोरी करते हैं। ब्याज से कर्ज देते हैं।' टूटे-फूटे अधूरे वाक्य, कहीं कर्ता गायब तो कहीं क्रिया नदारद। आगे इसी खंड की इकाई 16 में 'जीने की कला' शीर्षक महादेवी वर्मा के निबंध में आपको ऐसा अधूरापन नहीं मिलेगा लेकिन परसाई जी की शैली का यह अधूरापन ही उनकी व्यंग्यात्मक शैली की प्रमुख शक्ति बन जाता है।

परसाई की व्यंग्यात्मक शैली की अपनी निजी विशेषता है, जो कबीर से अधिक मिलती है। वे कबीर की भाँति अपने व्यंग्य वाक्यों का प्रयोग विनोद के लिए नहीं, वरन् शत्रु को तिलमिला देने के लिए करते हैं। शत्रु भाव से किए जाने वाले व्यंग्यों मे वे प्रायः निर्ममता का परिचय देते हैं, लेकिन ऐसी सधी हुई शैली में कि व्यंग्य का पात्र तिलमिलाकर भी चूँ या हाय न कर सके। आपके गहन अध्ययन के लिए निर्धारित इस निबंध में परसाई का सारा आक्रोश तथाकथित विष्णुभक्त व्यवसायियों पर ही है, लेकिन यहाँ आक्रोश विष्णु को आधार बनाने के कारण परोक्ष हो गया है। परसाई ने शत्रु-भाव से व्यंग्य प्रहार के साथ ही मित्र-भाव से भी व्यंग्य किया है। साधारण शोषित-उत्पीड़ित जनता भी अपनी रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और अज्ञान के कारण उनके व्यंग्य का लक्ष्य बनी है। लेकिन ऐसे प्रसंगों में वे पूरी सहानुभूति के साथ मित्र-भाव से व्यंग्य करते हैं। इस प्रकार परसाई की व्यंग्य-शैली की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह भी है कि उसके प्रयोग में शत्रु और मित्र के बीच फर्क को हमेशा ध्यान में रखा गया है। इस शैली के प्रयोग से उनके व्यंग्यों की सोद्देश्यता तीखी और सार्थक बन गई है। इस संग्रह के अपने 'कबीर समारोह क्यों नहीं' शीर्षक निबंध में उन्होंने शूद्रों को भी अपनी अधोगति का कारण बताते हुए लिखा है, "मैंने रामकथा और रामलीला में स्वयं शूद्रों को अपने पीड़न के प्रसंग पर 'हरेनमः' करके गद्‌गद होते देखा है। जिम्मेदारी हमारी है। हमने शूद्रों को दबाया है। उसे शिक्षा और संस्कृति से वंचित करके आज भी उसे मध्य युग की हालत में रखा है।" (पृ.111) इस संबंध में शूद्र समस्या के समाधान के लिए उन्होंने सरकारी प्रयास की अपर्याप्तता पर व्यंग्य करते हुए लिखा है कि "मगर याद रहे, जगजीवन राम को उमाशंकर दीक्षित के साथ एक 'डिनर' खिलाने से कोई सामाजिक परिवर्तन नहीं हो सकता।" (पृ.120 'वैष्णव की फिसलन) निबंध में ही वे व्यावसायियों के काले कारनामें को उजागर करने के लिए गांधी के साथ ही सोमरस और सामवेद, कृष्णलीला, प्रकृति-पुरुष संबंध आदि के पौराणिक प्रसंगों के अवसरवादी प्रयोग की सीमाओं को रेखांकित करते हैं। इस प्रकार व्यंग्य प्रयोगों के लिए वे प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों पद्धतियों का सहारा लेते हैं।

इस इकाई की प्रस्तावना में हमने संक्षेप में परसाई जी द्वारा प्रयुक्त व्यंग्य के प्रमुख तेवरों पर विचार किया है। यहाँ कुछ विस्तार से उन्हें पुनः दुहरा देना आपके लिए उपयोगी होगा। परसाई को बड़ा व्यंग्यकार इस लिए माना जाता है, क्योंकि उन्होंने व्यंग्य को एक नई पहचान दी है। उन्होंने सार्थक व्यंग्य की रचना ही नहीं की है, वरन् हमें वह विवेक भी दिया है, जिससे हम व्यंग्य के नाम पर प्रचलित फूहड़ता से सार्थक और स्वस्थ व्यंग्य को अलग कर सकें। उन्होंने हास्य एवं विनोद की सीमाओं में बंधे व्यंग्य को मुक्त कर उसे एक महान और गंभीर सामाजिक लक्ष्य से जोड़ दिया है। अवसर के अनुकूल व्यंग्य के जितने भी तेवर हैं, उन सभी का सहारा परसाई जी ने सावधानीपूर्वक लिया है। कभी वे अपने व्यंग्य बाणों से प्रतिपक्षी की धज्जियाँ उड़ा देते हैं, तो कभी केवल चिकोटी काटकर रह जाते हैं, कभी रस लेते हुए उनके ढोंग और कपट को उघाड़ते हैं, तो कभी मखौल उड़ाकर रह जाते हैं, कभी मीठी छुरी से उन्हें रेतते हैं, तो कभी सरेआम नंगा कर देने से भी नहीं चूकते। इस प्रक्रिया में वे कहीं भी उद्दण्डता या अभद्रता का परिचय नहीं देते। सामाजिक परिवर्तन के महान उद्देश्य से प्रेरित होने के कारण उन्होंने व्यंग्य की अंतर्वस्तु के साथ ही उसके शिल्प को भी समृद्ध किया है। वे एक बड़े व्यंग्यकार के रूप में हमारे सामने आते हैं।

14.8.2 भाषा

संरचना-शिल्प पर विचार करते हुए हमने आरंभ में ही निबंध की परंपरागत भाषा से परसाई की भाषा के अंतर की ओर आपका ध्यान आकृष्ट किया है। वस्तुतः विचार और चिंतन की अभिव्यक्ति के दबाव के कारण ही गद्य-भाषा का उद्‌भव और विकास हुआ तथा साहित्यिक विधा के रूप में सबसे पहले निबंध अस्तित्व में आया। निबंधों के माध्यम से ही अपनी विचारधारा और अपने चिंतन को कुशलता-पूर्वक व्यक्त किया जा सकता है। अतः गद्य और निबंध का गहरा संबंध आरंभ से ही रहा है। निबंध के लिए व्याकरण सम्मत और सुव्यवस्थित गद्य की आवश्यकता पहले से ही, महसूस की जा रही थी। इसीलिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंध को गद्य की कसौटी के रूप में स्वीकार किया था। लेकिन परसाई जी ने निबंध की भाषा की दृष्टि से भी अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके व्यंग्यकार व्यक्तित्व का अक्खड़पन उनकी भाषा में भी मिलता है। इसके साथ ही भाषा की लक्षण और व्यंजना शक्तियों की परख भी उन्हें भाषा का पारखी सिद्ध करती है। भाषा के तत्सम, तद्‌भव और देशज स्वरूप के चक्कर में वे अधिक नहीं पड़े हैं। व्याकरण सम्मत परिनिष्ठित भाषा का आग्रह भी उनकी रचनाओं में नहीं मिलता। बोल-चाल के व्यावहारिक रूप को ही उन्होंने अपना आदर्श बनाया है। अतः हिंदी के तत्सम-तद्‌भव शब्दों के साथ ही उन्होंने उर्दू, अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रसंग एवं अवसर के अनुकूल प्रयोग किया है।

प्रस्तुत निबंध के संदर्भ में देखें तो विषय के दबाव के कारण सूदखोरी, कर्ज, बल्दियत, मुनीम जैसे उर्दू शब्दों के साथ ब्लैक, बाथरूम, लांड्री, लॉन, टेरेस गार्डन, एक्जीक्यूटिव, अफसर, नानवेज, स्टाकिस्ट, बॉर, कैबरे, बेयरा आदि अंग्रेजी शब्दों के साथ ही, वैष्णव, आशीर्वाद, धर्मसंकट, शाकाहार, धर्मात्मा, नतमस्तक, साष्टांग, शुद्ध आत्मा, सोमरस, कृष्णावतार, चीरहरण आदि संस्कृतिनिष्ठ तत्सम शब्दों का खुलकर प्रयोग हुआ है। बावजूद इसके प्रस्तुत निबंध की भाषा का मुख्य तेवर बोलचाल की भाषा का ही है। लेकिन इस निबंध की भाषा की जो वास्तविक क्षमता है, वह निहितार्थों, विपरीत लक्षणा, सांकेतिकता आदि द्वारा प्रकट हुई है। इन्हीं के माध्यम से व्यंग्यकार ने अपने लक्ष्य को कुशलतापूर्वक ध्वनित कराया है। इसे विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से आप आसानी से समझ सकते हैं।

"बैठक में आकर धर्म को धंधे से जोड़ते हैं। धर्म धंधे से जुड़ जाए, इसी को योग कहते हैं।" "कर्ज लेने वाले आते हैं तो भगवान के मुनीम हो जाते हैं।" "सब प्रभु की इच्छा से हो रहा है। उनके प्रभु भी शायद दो नम्बरी हैं।" "वैष्णव की विशुद्ध आत्मा से आवाज आयी।" "मूर्ख, कृष्णावतार में मैंने गोपियों को नचाया था, उनका चीर-हरण किया था।" इन वाक्यों, वाक्यांशों और पदों से जो निहितार्थ (छिपा हुआ अर्थ) ध्वनित होता है, वह व्यंग्य-कौशल में अत्यधिक वृद्धि करता है। अतः शिल्प-संरचना अर्थात शैली और भाषा दोनों ही दृष्टियों से यह निबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है।

14.9 निबंध का शीर्षक

किसी रचना का शीर्षक किसी प्रमुख घटना, चरित्र अथवा विशेष स्थिति से जुड़ा होना चाहिए।

लेकिन निबंध का शीर्षक प्रायः उसकी विषयवस्तु से जुड़ा होता है। 'वैष्णव की फिसलन' जहाँ एक ओर निबंध की अंतर्वस्तु को संकेतित करता है, वहीं दूसरी ओर उसके प्रतिपाद्य को भी व्यंजित करता है। इसमें प्रयुक्त 'फिसलन' शब्द लगातार वैष्णव भक्त के फिसलते रहने, एक-एक सीढ़ी नीचे गिरते जाने या निरंतर पतित होते जाने का भाव लिए हुए है। वह सूदखोरी के कपटपूर्ण व्यवसाय से काला बाजारी की ओर अग्रसर होता है। अकूत काला धन इकट्ठा हो जाने से चिंतित होकर वह उसे सफ़ेद या एक नंबर का बनाने के लिए होटल व्यवसाय का सहारा लेता है। इस व्यवसाय में होटल में ठहरने वालों के कमरे का किराया, खान-पान पर होने वाले खर्च का बाकायदे हिसाब-किताब रखना पड़ता है। अतः यहाँ काला धन या नम्बर दो के धन के लिए अवकाश कम हो जाता है।

होटल में शुद्ध शाकाहारी भोजन की व्यवस्था से ठहरने वाले बड़े लोगों की असुविधा को दूर करने के लिए उसे कई कार्य ऐसे करने पड़ते हैं, जो होटल व्यवसाय को अधिक लाभदायक बनाने के लिए जरूरी हैं। इस प्रक्रिया में उसे पहले मांसाहार की व्यवस्था करनी पड़ती है, जिसके लिए शराब की व्यवस्था जरूरी हो जाती है। और आगे बढ़ने पर होटल में 'कैबरे' (स्त्रियों के अर्ध-नग्न नृत्य) की भी व्यवस्था करनी पड़ती है। अपने व्यवसाय को और अधिक चमकाने के लिए नारी व्यवसाय के स्तर तक उसे गिरना पड़ता है, जो अपने आप में काला धंधा या नम्बर दो का धंधा है। इस तरह उसे लगातार नीचे गिरते हुए अंततः पुनः सूदखोरी और काला बाजारी जैसे नम्बर दो के धंधे तक उतरना पड़ता है। यही वैष्णव की फिसलन है। यह शीर्षक निबंध की अंतर्वस्तु और प्रतिपाद्य को पूरी तरह रेखांकित करता है। शीर्षक में व्यंग्यात्मकता का समावेश होने के कारण वह पूर्ण रूप से सार्थक बन गया है।

14.10 प्रतिपाद्य

निबंध की अंतर्वस्तु और उसके शीर्षक की सार्थकता के परिचय के माध्यम से आपने निबंध के प्रतिपाद्य के संबंध में अब तक पर्याप्त संकेत प्राप्त कर लिए हैं। प्रतिपाद्य से अभिप्राय यह है कि परसाई जी ने इसमें क्या प्रतिपादित करना या बताना चाहा है और क्यों बताना चाहा है। अतः प्रतिपाद्य के अंतर्गत एक आग्रह या अनुरोध भी आ जाता है, जो लेखक द्वारा पाठकों के लिए प्रेरक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुत निबंध में हरिशंकर परसाई का लक्ष्य केवल सूदखोरी, काला बाजारी और होटल व्यवसाय में बढ़ रहे भ्रष्टाचार से परिचित कराना मात्र नहीं है। वे लोभ-लाभ पर आधारित सम्पूर्ण व्यवसायिकता की विकृतियों और उसके समाजविरोधी स्वरूप को व्यंग्य के माध्यम से उद्घाटित करते हुए पाठक को जागरूक बनाकर सावधान भी करते हैं। इस प्रक्रिया में वे पाठक के अंदर इन सामाजिक बुराइयों के प्रतिकार या प्रतिरोध की भावना भी पैदा करते हैं। परसाई ने अपने सम्पूर्ण साहित्य के माध्यम से समाज के हर क्षेत्र में व्याप्त विकृतियों की बखिया उघाड़ते हुए उसके प्रतिकार की आवश्यकता को भी रेखांकित किया है। इसे उनकी प्रमुख विशेषता माना जा सकता है। इस निबंध में उनका लक्ष्य विभिन्न व्यवसायों में पनपने वाले भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान है। धर्म की आड़ में होने वाले भ्रष्टाचार समाज के लिए और अधिक घातक हो जाते हैं, इस वास्तविकता का उद्घाटन समस्या के समाधान की एक महत्वपूर्ण मंजिल है। क्योंकि धार्मिक भावना से संचालित पाठक धर्म के दुरुपयोग के प्रति सावधान रह कर ही अपने सामाजिक दायित्व को सही ढंग से पूरा कर सकता है। धर्म या भक्ति भावना अपने आप में कोई अच्छी या बुरी चीज़ नहीं है। उसकी अच्छाई-बुराई उसके सामाजिक व्यवहार पर निर्भर करती है। अतः धर्म जब सामाजिक भ्रष्टाचार के लिए ओट बन जाए, उसे बढ़ावा देने लगे तो वह निश्चय ही त्याज्य बन जाता है। व्यावसायिक भ्रष्टता के साथ ही धर्म विषयक उपर्युक्त संदेश भी लेखक ने इस निबंध के माध्यम से पाठक के सामने प्रस्तुत किया है।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कोष्ठकों में दें और अपने उत्तर इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाकर जाँचें -

10) 'वैष्णव की फिसलन' निबंध किस शैली में लिखा गया है?

क) भावात्मक शैली

ख) व्यंग्यात्मक शैली

ग) वर्णनात्मक शैली

घ) व्याख्यात्मक शैली ( )

11) इस निबंध में किस प्रकार की शब्दावली की प्रधानता है?

क) देशज शब्दावली

ख) उर्दू शब्दावली

ग) तत्सम शब्दावली

घ) बोल-चाल की मिश्रित शब्दावली ( )

12) परसाई के निबंधों में उनके व्यक्तित्व का कौन-सा रूप सर्वाधिक महत्वपूर्ण है?

क) समझौतावादी

ख) क्रांतिकरी

ग) यथा स्थितिवादी

घ) सुधारवादी ( )

13) वैष्णव की फिसलन' शीर्षक का प्रमुख आधार क्या है?

क) प्रमुख चरित्र

ख) मुख्य घटना

ग) प्रतिपाद्य

घ) विशेष स्थिति ( )

14) परसाई व्यंग्यात्मक रचनाओं में प्रतिपाद्य या उद्देश्य की दृष्टि से निम्नलिखित विशेषताएँ व्यक्त हुई हैं, लेकिन इनमें से एक विशेषता ऐसी है, जो उनकी रचनाओं में नहीं मिलती। बताइए कि वह कौन-सी विशेषता है?

क) भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करना।

ख) अन्याय का विरोध करना।

ग) मनोरंजन करना।

घ) जागरूक और सावधान करना। ( )

अभ्यास

नीचे दिए गए प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर दें और उत्तर को अंत में दिए गए उत्तर से मिलाकर जाँचें।

2) परसाई की व्यंग्यात्मक शैली संबंधी विशेषताओं को पाँच पंक्तियों में स्पष्ट करें -

.....

.....

.....

3) इस निबंध में धर्म के दुरुपयोग को किस प्रकार व्यक्त किया गया है? उत्तर सात पंक्तियों में दें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) इस निबंध के प्रतिपाद्य को दस पंक्तियों में स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

14.11 सारांश

इस इकाई का अध्ययन आपने कर लिया है। अब आप निम्नलिखित तथ्यों को समझकर बता सकते हैं और अपनी भाषा में लिख सकते हैं :

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप परसाई के जीवन और उनके साहित्यिक महत्व को अपनी भाषा में लिख सकते हैं।
- इस निबंध के कथ्य या उसकी अंतर्वस्तु को समझ और बता सकते हैं।
- इस निबंध में चित्रित वैष्णव के वर्गीय चरित्र की वास्तविकता से परिचित होकर उसे स्वयं विवेचित कर सकते हैं।
- परसाई द्वारा प्रयुक्त व्यंग की सामाजिक उपयोगिता को समझ और लिख सकते हैं।
- इस निबंध में व्यंग्यात्मक शैली और बोल-चाल की व्यावहारिक भाषा का प्रयोग हुआ है। इसे पढ़कर आप परसाई जी की भाषा शैली की सभी विशेषताओं का कुशलतापूर्वक विश्लेषण कर सकते हैं।
- निबंध के लिए प्रयुक्त शीर्षक व्यंग्यात्मक होने के साथ ही उसकी अंतर्वस्तु और प्रतिपाद्य से जुड़कर अत्यंत सार्थक हो गया है। इसे पढ़कर आप शीर्षक संबंधी विशेषताओं पर भी सफलतापूर्वक प्रकाश डाल सकते हैं।
- परसाई जी का दृष्टिकोण वामपंथी चेतना से प्रभावित होने के कारण लोकोन्मुखी और समाजनिष्ठ है। उनके इस दृष्टिकोण के आधार पर आप इस निबंध के प्रतिपाद्य का

- सम्पूर्ण इकाई का अच्छी तरह अध्ययन करने के बाद आप इस निबंध से संबद्ध किसी भी प्रश्न का समुचित उत्तर दे सकते हैं।

14.12 उपयोगी पुस्तकें

डॉ.संजय शर्मा : व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की सामाजिक प्रतिबद्धता, ईशान पब्लिकेशंस, 2, हरवंश काटेज, शिमला।

डॉ.कमला प्रसाद : ऑखिन देखी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2.

श्री मोहर देवलिया : हरिशंकर परसाई : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, साहित्य वाणी, इलाहाबाद।

श्री राधा मोहन शर्मा : हरिशंकर परसाई : व्यंग्य की वैचारिक पृष्ठभूमि, भूमिका प्रकाशन, दरियांगज, नई दिल्ली-2.

14.13 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) ग

2) ग

3) ख

4) ख

5) घ

6) ग

7) ग

8) ग

9) ख

10) ख

11) घ

12) ख

13) ग

14) ग

अभ्यास

1) दोनों व्याख्याओं को देखकर व्याख्या स्वयं कर लें।

2) हरिशंकर परसाई कभी परोक्ष रूप से तो कभी प्रत्यक्ष रूप से समाजव्यापी भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करते हैं। इस प्रक्रिया में वे कभी विरोधियों की धज्जियाँ उड़ाते हैं तो कभी

मखौल करके ही रह जाते हैं। आवश्यक होने पर वे निर्मम प्रहार भी करते हैं। भ्रष्टाचार में आकंठ मग्न लोगों को सरेआम नंगा करने से भी वे नहीं चूकते। उनका व्यंग्य-प्रयोग प्रायः सामाजिक हित से प्रेरित होता है।

3) व्यवसायियों के प्रतिनिधि वैष्णव भक्त ने अपनी सारी जायदाद विष्णु भगवान के मंदिर के नाम कर दी है। अपने को विष्णु का सेवक मानकर वह सूदखोरी, कालाबाजारी आदि उनके नाम पर करता है। होटल में मांसाहार, मदिरापान, कैबरे नृत्य, यहाँ तक कि नारी-देह के व्यापार का धंधा भी वह विष्णु के आदेश से ही करता है। अपनी समूची कमाई को वह विष्णु की कृपा, उनकी मर्जी से मिली हुई सिद्ध करता है। इस प्रकार वह धर्म को धंधे से जोड़कर उसका दुरुपयोग करता है।

4) वैष्णव की फिसलन' नामक निबंध का प्रतिपाद्य सूदखोरों, कालाबाजारियों और विभिन्न व्यवसायों में लगे समुदाय द्वारा धर्म की आड़ लेकर किए जाने वाले धंधे के प्रपंच पूर्ण कार्यों का पर्दाफाश करना है। सामाजिक उत्थान से प्रेरित अपने इस कार्य को व्यंग्य के माध्यम से परसाई जहाँ एक ओर लोभ-लाभ पर आधारित विकृतियों के समाजविरोधी स्वरूप को उद्घाटित करते हैं, वहीं दूसरी ओर पाठक को जागरूक बनाते हुए उसके प्रतिरोध के लिए कटिबद्ध भी करते हैं। कोई भी चीज़ अपने आप में अच्छी या बुरी नहीं होती। उसका सामाजिक व्यवहार ही उसे अच्छा या बुरा बनाता है। अपनी इस मान्यता को केंद्र में रखकर परसाई ने धर्म और व्यावसायिकता के स्वार्थ-प्रेरित गठजोड़ के समाज विरोधी स्वरूप का अत्यंत कलात्मक उद्घाटन भी किया है।